

सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवेंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, जनवरी-फरवरी, 2013

शांति की वाचा

राज्य तेरा ही है

और मैं उन्हें और अपनी पहाड़ी के आसपास का क्षेत्र आशिष का कारण बनाऊंगा और नियत ऋतु में वर्षा, हां, वे आशिष की वर्षा होंगी। (यहेजकेल 34:26)

परमेश्वर हमारे निवास-स्थानों को खुशहाल और हमारी भू-भागों की उपज को समृद्ध बनाने के लिए उत्सुक हैं। कोई भी पिता अपने बच्चों को दुख झेलने के लिए पैदा नहीं करता। परमेश्वर यह वादा करते हैं कि वह अपने बच्चों को शान्ति और आशिष देंगे। 'और मैं उनके साथ शान्ति की वाचा बान्धकर देश से हिंसक पशुओं को निकाल दूंगा जिससे कि वे जंगल में सुरक्षित रह सकें तथा वन में सो सकें। (यहेजकेल 34:25)

वह तुमसे एक वाचा बाँधना चाहते हैं। मैदान के वृक्षों में भी फल लगेंगे, भूमि की उपज में वृद्धि होगी और वे अपने देश में

शांति की वाचा ... पृष्ठ ३ पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती
STAR UTSAV

चैनल पर

हर शनिवार सुबह 8:30 से 9:00 बजे

क्यों कि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं। (मत्ती 6:13)

तेरी ही महिमा है। परमेश्वर की महिमा को हम कभी ना चुराएं, इस विषय में हमें बहुत सावधान रहना है। मैंने यह देखा है कि कई बार, जब कुछ खास काम या जिम्मेदारियाँ कुछ लोगों को दिये जाते हैं, वे जल्दी ही, समझने लगते हैं कि वह उनका राज्य है। और वह उनका अपना इलाका है। नहीं, राज्य तुम्हारा नहीं है। हमारे दिलों में महिमा पाने की उस सहज लालसा का अन्त होना जरूरी है। हमें इस के ऊपर पूरी तरह से विजय पानी है।

कूस पर, प्रभु यीशु, जो आकाश और पृथ्वी को बनाने वाला है, उसे देखो। और साथ में उन आने-जाने वाले लोग जो सिर हिला हिला कर उनकी निन्दा कर रहे थे, 'यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो कूस पर से उतर आ।' क्या उन्होंने अपनी महिमा की खोज की? नहीं। अपने लिए कोई प्रतिष्ठा हाँसिल नहीं की। हमें उनके पदचिन्हों में चलना है।

हम सब को कुछ प्रतिष्ठा हासिल करने की प्रबल इच्छा रहती है। हमें उस इच्छा को कूस के पास त्यागना है। जहाँ तक मेरी बात है, मुझे अज्ञात रहना पसंद है। मुझे एक कोने में बैठना पसंद है जहाँ कोई मुझे नहीं

पहचाने। तब मैं अपनी बाईबल पढ़ सकता हूँ या अपना काम बिना रुकावट के कर सकता हूँ।

दुर्भाग्यवश, लगता है कि हमारे अज्ञात रहने के दिन समाप्त हो रहे हैं। क्यों कि दूरदर्शन पर हमारे प्रसारणों के जरिये, ज्यादा से ज्यादा लोग मुझे पहचानने लगे हैं। हमारी गुवहाटी सभा के बाद, हवाई अड्डे पर मुझे सचमुच आश्चर्य हुआ, जब एक पुलिस इन्स्पेक्टर ने मुझे पहचान लिया। जब सिक्युरिटी के लोगों ने मुझे रोका था और मेरे ब्रीफकेस का पूरी तरह से तलाशी लेना चाहते थे, उन्होंने मेरी सहायता की। जाहिर है कि वह हमारे टी.वी. कार्यक्रमों को देख रहा है।

राज्य, पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं। तुम्हारे जीने का और काम करने का ढंग अब तुम्हारे बच्चे देखेंगे। और यह भी कि तुम सचमुच इस पर जी रहे हो कि नहीं। वे जान लेंगे की तुम सच में परमेश्वर के राज्य का निर्माण कर रहे हो या अपने राज्य का।

मेरे पिताजी ने कभी भी मेरे सामने कोई सांसारिक लक्ष्य नहीं रखा था। वह सिर्फ यह कहते थे, 'परमेश्वर की इच्छा को पूरी करो।' जब उन्होंने देखा की मैं पढ़ाई में तेज नहीं हूँ, वह निराश नहीं हुए। जब उन्होंने देखा कि मैंने पढ़ाई में कुछ नाम नहीं

कमाया, वह उदास नहीं हुए। कभी भी उन्होंने नहीं कहा, 'तुम किसी लायक नहीं हो; गणित में जितनी क्षमता मुझमें है, लगता है उस में से आधी भी तुम में नहीं है। तुम्हें यह करना है। तुम को उस में उत्तीर्ण होना है।' नहीं, वे कभी भी मुझ से ऐसे बाते नहीं कहते। उन्होंने मुझे सिखाया कि मैं परमेश्वर की इच्छा पूरी करूं। कैसी संपत्ति मेरे पिताजी ने मुझे दी है। वही है जिसकी मैं ने अपनी पूरी जिंदगी में खोज की है।

मैं ने अपने लिए किसी बड़ी चीजों की तलाश नहीं की। मैं ने सिर्फ परमेश्वर की इच्छा की खोज की है। जब कुछ लोग सोचते हैं कि मैं एक कुशल आयोजक हूँ और बहुत दूर तक चीजों के बारे में सोचता हूँ, मैं कहता हूँ, 'नहीं, मैं एक नासमझ आदमी हूँ।' मैं नियमित रूप से परमेश्वर के पास जाता हूँ। और उनके विचारों को पाने के लिए इन्तजार करता हूँ। मेरा काम करने का तरीका वही है।

तुम अपने बच्चों को क्या सिखा रहे हो? आज कल कुछ माता-पिता अपने बच्चों को सिर्फ सांसारिक मूल्यों को ही सिखा रहे हैं। उनको देखकर मैं बहुत उदास हो जाता हूँ। ऐसे मा-बाप जो एक वक्त पर परमेश्वर के लिए त्याग का जीवन जिये थे, आज वे भी अपने बच्चों की सांसारिक धन-दौलत पर खुशी मना रहे हैं, यह देखकर मेरा दिल टूट जाता है। अपने बच्चों की आध्यात्मिक

गरीबी पर, लगता है उनको कोई चिन्ता नहीं है। इस तरह का विचार रखना हमें केवल आत्मा-विनाश के रास्ते पर ले जाता है। ऐसे लोगों को पश्चाताप करके अपने सांसारिक तौर-तरीके छोड़ देने चाहिए। इस संसार में हमारा उद्देश्य और लक्ष्य सांसारिक सफलता प्राप्त करने वाला रहे, सिर्फ यही नहीं है। बड़ी नौकरी, बड़ी पगार - हम सिर्फ इन बातों पर केन्द्रित हो रहें। हमारे बच्चे पैसों के पीछे ना भागते रहें। उन्हें कहना चाहिए, 'मैं परमेश्वर की इच्छा करने वाला हूँ। मैं परमेश्वर की स्तुति करता हूँ कि आज भी ऐसे लोग हैं। हमारे नवयुवक और युवतियों में ऐसी मिशनरी आत्मा होनी चाहिए। हमारे बच्चों को परमेश्वर के राज्य के निर्माण करने के लिए खड़ा होना है।

मेरे प्यारे लोगों, अपने आप को छोटे-छोटे लक्ष्यों तक सीमित मत करो। क्या अपने बच्चों के सामने आध्यात्मिक मूल्यों को रख रहे हो? कई बार जब एक बड़ा निर्णय लेने की बारी आती है लोग अपने आराम, सुविधा और भौतिक उन्नति को ही देखते हैं। कितनी दुख की बात है। मगर यीशु ने हमें सिखाया कि पहले परमेश्वर के राज्य की खोज में लगे रहें।

लोग सोचते हैं कि सारी ताकत पैसों में ही है। वे सोचते हैं कि पैसे ही सब कुछ करवा सकते हैं। हमें अपने बच्चों को यह सिखाना है कि जीवित परमेश्वर पर विश्वास रखें और उनका आसरा वही हों। जब मैं ऐसे माँ-

बाप को देखता हूँ जो अपने बच्चों के दिमाग में ये बात बिठाए हैं कि पैसा ही सामर्थ्य है, मुझे यह बहुत मुश्किल जान पड़ता है कि कैसे इन लोगों को इस तरह के सोच-विचार से बाहर निकालूँ। वे लोग सोचते हैं कि पैसे से वह परमेश्वर के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं। अधिकतर, मैं आज भी यह देखता हूँ कि जब पैसे की अधिकता हो विश्वास कम हो जाता है। जब पैसे ज्यादा हो जाते हैं तो प्यार कम हो जाता है। क्यों? यह एक झूठा भरोसा है। सामर्थ्य परमेश्वर का है। सामर्थ्य तेरा है - यह बात अपने दिलों पर लिखो।

हमें यह सिखाया गया है कि 'विश्वास' ही विजयी है। इसलिए मैं हमेशा यह ध्यान रखता हूँ कि विश्वास से सब चीजों को देखूँ, विश्वास से ही काम करूँ और विश्वास के बोल ही बोलूँ। जब कभी मेरे बेटे या बेटि, अविश्वास का एक शब्द भी बोले तो मुझे बहुत डर लगता है। क्यों? यह परमेश्वर के प्रति अपराध है। सामर्थ्य तेरा ही है! वह सामर्थ्य संसार तुम्हें नहीं दे सकता।

मेरे प्रिय मित्रों, यीशु मसीह के सामने भी चुनने के लिए वह रखा गया था जब शैतान ने उनको परखा था। मगर मेरे और तुम्हारे समान अपनी मानवीयता में, यीशु मसीह हर एक विषय में परखे गये, मगर वह कभी भी शैतान के सामने नहीं झुके थे।

हमें प्रभु पर प्रबल विश्वास रखना है। और उनके सही मार्गों से हमें कभी नहीं मुड़ना

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj, Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School, Chitaunakothi, Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books, Hotel Victoria, Ground Floor, SBS Marg, Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh, Pin Code.793003, 0364-2501355

चाहिए। आइए अपने बच्चों को सही रास्ते से न भटकाएं। हमारे चारों ओर संसार यह कठोर प्रयास कर रहा है कि हमारे बच्चों को उस प्रतियोगिता के चक्र में फंसा ले। कृपया, अपने बच्चों को इन सांसारिक मूल्यों से शिक्षित ना करें।

आज कल दुनिया बहुत बलवान और सम्मोहित हो गयी है। मगर हमारा विश्वास केवल जीवित परमेश्वर में ही हो। अपने विश्वास की जाँच करो। प्रभु हमारी सहायता करें!

- जोशुआ दानिय्येल।

शांति की वाचा... पृष्ठ 1 से

सुरक्षित रहेंगे। जब मैं उनके जूए को तोड़कर उनको उनके हाथ से छुड़ा लूंगा जिन्होंने उनको दास बनाया था, तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। (यहेजकेल 34:27)

हमेशा हम यह सोचते हैं कि लोग हमें दबा रहे हैं। मगर परमेश्वर कहते हैं कि प्रकृति भी आदमी को दबाती है। मनुष्य के पाप ने उसके आस पास की प्रकृति को प्रभावित किया है। प्रकृति जो मनुष्य के गुलाम होनी थी उसकी मालिक बन गयी। बारिश के अभाव का भय रहता है। अहाब को वह डर था मगर एलिय्याह को नहीं। जब एक मनुष्य परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करता है तब प्रकृति उसकी आज्ञा मानेगी।

'क्योंकि हम जानते हैं कि सम्पूर्ण सृष्टि मिलकर प्रसव-पीड़ा से अभी तक कराहती और तड़पती है। (रोमियों 8:22) 'क्यों, मनुष्य का पाप, प्रकृति को प्रभावित करता है। उसे भी प्रभावित करता है। उसके परिवार को प्रभावित करता है। उसके चारों ओर समाज को प्रभावित करता है। जब एक देश व्यभिचारी और हिंसक बन जाता है और उसमें न्याय नहीं दिया जाता, ऋतु अस्त-व्यस्त हो

जाती हैं। नियत ऋतु में बारिश नहीं होती है। जब बारिश की जरूरत नहीं, फसल को नष्ट करने बाढ़ आ जाती है। और प्राकृतिक विपत्तियाँ धरती का विनाश करती हैं।

कई आदमी, जो अन्याय से पैसे कमाते हैं, उनके परिवारों में बे समय मौत होती रहेगी। एक बार, मेरे छात्र ने मुझ से चाहा कि मैं किराया पर लिये गये, अपने दो मकानों में से, एक में थोड़े समय के लिए उसको रहने की इजाजत दूँ। जिस मकान में हम रह रहे थे, अचानक अकारण हमें वहाँ से निकाल दिया। भारी वर्षा के दौरान मजबूरन हमें तम्बुओं में रहना पड़ा। मगर उस छात्र ने हमारा मकान हमें वापस नहीं दिया। उसका विवेक बिलकुल मरा हुआ था। थोड़े समय के बाद, जवानी में ही वह मर गया।

प्रकृति में ऐसी गुप्त शक्तियाँ हैं, जो उन लोगों को दबाती है जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं करते हैं। अगर परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया जाये, उस क्षेत्र में समृद्धि होगी। अगर तुम उपवास रखकर, रोओ और पश्चताप करके, अपने पाप को दूर करोगे तो, तुम्हारे हानि में खोये हुए वर्षों को वापस देगा। परमेश्वर तुमसे एक वाचा बाँधना चाहते हैं। जब तुम पाप करते हो, तो उस वाचा से बाहर निकल आते हो। और अन्धकार की शक्तियों की सामर्थ्य के तले आ जाते हो। अन्धकार का राज्य इन्तजार में हैं। जब तुम पाप करते हो, अपने को पकड़ने के लिए और नष्ट करने के लिए, दुष्टात्माओं को जगह देते हो।

पाप की वजह से प्रकृति कराह रही है। हमारे दफ्तर झूठ और लालच के पाप से भरे हैं। गरीबों को दबाया जाता है। सब से अधर्मी व्यक्ति भी यह सोचता है कि वह उन्नति कर सकता है।

परमेश्वर कहते हैं कि उनके जन कभी अपमान नहीं

सहेंगे। 'और जो देश मैंने तुम्हारे पूर्वजों को दिया था तुम उसमें बस जाओगे; तब तुम मेरी प्रजा होगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊंगा। फिर मैं तुम्हें तुम्हारी सारी अशुद्धता से छुड़ाऊंगा, और अन्न को बुलाकर अत्यधिक बढ़ाऊंगा और मैं तुम्हारे बीच अकाल न पड़ने दूंगा। और मैं वृक्षों के फल और खेत की उपज बढ़ाऊंगा जिस से कि जाति जाति के मध्य अकाल के कारण फिर तुम्हारी निन्दा न हो। (यहेजकेल 36:28-30)' परमेश्वर खंडहरों का और विध्वस्त देशों का पुनः निर्माण करने के लिए उत्सुक हैं।

अस्वस्थ लोगों को और गरीबों को सुसमाचार सुनाना है। तुम में से कुछ लोग सिर्फ आराम से रहना चाहते हो। सुसमाचार के प्रचार में तुम अपनी छोटी उंगली तक हिलाना नहीं चाहते हो। मनुष्य के पापों तले दबकर, प्रकृति कराह रही है। परमेश्वर चाहते हैं कि वह मनुष्य के हृदय को रिहा करें और प्रकृति को मुक्त करें। और आदमी को प्रकृति के ऊपर स्वामी ठहराएं।

- एन दानिय्येल।

सत्य की परख

**“छल के तराजू से
यहोवा को धृणा आती
है, पर वह सही नाप-
तौल से आनन्दित होता
है। (नीतिवचन ११-१) “**

अगर परमेश्वर को पसंद है, तो मुझे भी पसंद है - चार्ल्स स्पर्जन

तब वे तेरे दर्शन के खोज करेंगे; जब वे संकट में पड़ेंगे तो मुझे लगन से खोजेंगे। (होशे 4:15)

हमें ताड़ना खुशी-खुशी स्वीकार करनी चाहिए। यह एक कठिन पाठ जरूर है। मगर पवित्र आत्मा में यह क्षमता है कि वह हमें यही पाठ पढ़ाए। हम प्रसन्न हो कि परमेश्वर अपने ही ढंग में काम कर रहे हैं। कभी कभी जिस काम को तुम करना नहीं चाहते हो, उसी को करना पड़े, और ऐसे करने में तुम्हें आनंद न आता हो, तुम्हें कैसे महसूस होता है? मेरा यह मतलब है कि तुम उस काम को करना नहीं चाहोगे। मगर यह पाते हो कि तुम्हारे किसी चहते को ऐसे करने से खुशी मिलती है, तो तुरंत यही मुश्किल काम तुम्हारे लिए एक सुखद अनुभव बन जाता है।

जब किसी व्यक्ति जिसका तुम बहुत आदर करते हो, वह बीमार और अस्वस्थ है, क्या कभी तुमको ऐसा नहीं लगा कि कम से कम एक या दो दिन, खुशी से उसके बदले तुम उसकी पीड़ा को सहो, ताकि उसे थोड़ा सा आराम मिले। कुछ समय तक एक अशक्त रहने में क्या तुम्हें खुशी नहीं होगी, ताकि तुम्हारा प्रिय व्यक्ति थोड़े समय अच्छी सेहद का आनंद उठाये? एक अधिक मात्रा में इसी उद्देश्य को अपनी आत्मा पर नियंत्रण करने दो। यह महसूस करने की कोशिश करो, 'यदि परमेश्वर को पसंद है तो मुझे भी पसंद है। अगर, परमेश्वर यही तेरा इच्छा है, मेरी भी वही इच्छा होगी। यदि मेरे अधिक कोड़े खाने से आपको अधिक आदर-सम्मान मिले तो कोड़ों की संख्या

बढ़ने दो। और आपका सम्मान बढ़ाने का मुझे मौका मिलेगा।'

क्रूस भी मधुर बन जाता है जब पवित्र आत्मा द्वारा हमारे जीवन इतने मधुर बन जाएंगे की हमारी इच्छा, परमेश्वर की इच्छा के साथ-साथ चलती है। एलीहु की तरह, हमें भी यह कहना सीखना चाहिए, 'मैंने सहा, मैं सहूंगा, मुझे सब स्वीकार है।'

कोरी देन बूम

सन्, 1892, हॉलैण्ड में कोरी टेन बूम का जन्म हुआ था। एक प्यारे मसीही परिवार में वह सबसे छोटी बच्ची थी। और एक ऐसा परिवार जिसमें सब के दिल, घर और हाथ हर जरूरतमंद के लिए हमेशा खुले रहते थे। जब वह बड़ी हो रही थी, वह सहज बात ही है कि कोरी अपने आस-पास के लोगों की सहायता करने पहुँचती थी। अपने पिताजी के घड़ी-साज की दुकान में काम करने के अलावा उसने लड़कियों के लिए एक मसीही क्लब का आरंभ किया था। वह मानसिक विकलांगों के बीच में काम, अनाथ बच्चों की देखभाल में सहायता करना और स्कूलों में बाइबल का पाठ सिखाना, जैसे काम किया करती थी।

दूसरे विश्व युद्ध में हॉलैण्ड पर जर्मनी के आक्रमण के बाद, जिन लोगों को उसकी मदद की जरूरत थी ऐसे लोगों की सहायता करना भी खतरनाक हो गया था। जर्मनी के क्रूर तानाशाह, अडॉल्फ हिटलर ने हॉलैण्ड में सभी यहूदी लोगों को गिरफ्तार करने के लिए अपने सैनिकों को भेजा था। उन सब को युद्ध बंदियों के शिविर में ले जाकर वहाँ बाद में उनको लाखों की तादाद में मार दिया जाता था। कोई भी यहूदियों की मदद करते पकड़ा जाता था,

उसको भी यही भुगतना पड़ता था।

मगर कोरी और उसका परिवार उन जरूरतमन्द लोगों से अपना मुँह नहीं फेरे। वे 'डच अन्डर ग्रंड मूवमेन्ट' नाम के गुप्त संचालन के भागीदार बने। ये लोग यहूदियों को छिपाते और सुरक्षित स्थानों पर बच निकलने के लिए मदद करते थे।

टेन बूम परिवार ने अपने घर में एक गुप्त कमरा बनवाया जिसे खोलने के लिए एक गुप्त दरवाजा था। वहाँ एक अलार्म व्यवस्था भी रखी, ताकि पूरे घर में खतरे का संकेत देने के लिए, घंटी बजा सकें। उनके साथ जो यहूदी रहते थे, उनसे यह अभ्यास भी करवाये कि वे कैसे उस गुप्त कमरे में प्रवेश करे और छिप जायें।

पास ही रहने वाले एक डच आदमी द्वारा जर्मनी के लोगों के हाथ पकड़वाए जाने से पहले, कोरी और उसकी अस्सी कार्यकर्ताओं के दल ने सौड़्यों की तादाद में यहूदियों को बच निकलने के लिए सहायता की। 28 फरवरी, 1944 के दिन, जर्मनी के सिपाहियों ने टेन बूम के घर पर धावा किया। उनमें से एक ने कोरी से पूछा कि कहाँ पर वह यहूदियों को छिपाकर रखे है। जब उसने उत्तर नहीं दिया तो उसने कोरी को बार-बार थप्पड़ मारा। उसको और उसके परिवार को गिरफ्तार कर लिया गया और वे अलग-अलग युद्ध कैदी शिविर में ले जाये गये। उसके पिता जो काफी बूढ़े थे, दस दिन बाद मर गये।

तीन महीनों के बाद, कोरी को रेवेन्सब्रूक में लाया गया। रेवेन्सब्रूक एक जाना-माना हत्या शिविर था जहाँ कई औरतों को मार दिया जाता था। वहाँ अपनी बहन बेट्सी से फिर उसकी मुलाकात हुई। रेवेन्सब्रूक उसके एक सब से भयानक दुःस्वप्न का सच होना था! लम्बे घंटों तक

कठिन परिश्रम, इमारतें चूहों से भरी, गरम करने की सुविधा के बगैर इमारतें, बहुत कम खाना और क्रूर पहरेदार। युद्ध के अंत से पहले 96,000 औरतों की वहाँ मृत्यु हुई।

एक बार, जब वह बहुत बीमार थी और एक ठेले को धक्के देने की ताकत उसमें नहीं थी एक पहरेदार ने कोरी को कोड़े से गर्दन पर मारा। मगर बेट्सी के प्रति किये जा रहे बुरे बरताव को देखना उसके लिए एक बहुत कठिन बात थी। बेट्सी की सेहत हमेशा इतनी अच्छी नहीं रहती थी। कैद में उसकी और भी बुरी हालत हुई। फिर भी, काम करते रहने के लिए और कई बार सर्दियों में घंटों तक सावधान खड़े रहने के लिए उसे मजबूर किया जाता था।

परमेश्वर पर उनके प्रबल विश्वास ने ही उनको, उस हर भयानक दिनों को गुजारने में सहायता की है। दूसरी महिलाओं से वे प्यार से मिलते - और उनका धीरज बढ़ाते थे, और उनके साथ मिलकर प्रार्थना करते थे। उस भयानक जगह पर भी वे परमेश्वर के प्यार को महसूस करते थे। वास्तव में, बेट्सी ने कोरी से कहा कि जब वह बाहर निकलेंगे तब वह हर जगह घूमकर, लोगों को यह बताना चाहेगी कि इस पूरी दुनिया में कोई भी जगह इतनी अन्धकारमय नहीं है जहाँ परमेश्वर के प्यार की ज्योति नहीं चमक पाये। उसने हॉलैण्ड और जर्मनी में ऐसे घरों की स्थापना करने की इच्छा की, जहाँ, जो लोग युद्ध की वजह से टूटे हैं, उनको चंगाई मिल सके।

बेट्सी अपना सपना सच होते नहीं देख पाई। वह कैद में ही मर गयी। मगर कोरी ने आगे चलकर अपनी बहन की इच्छा को पूरा किया। उसके उम्र की सारी औरतों को मार डालने से थोड़े समय पहले, एक टंकण-गलती की वजह से उसे रिहा किया गया था,

जिसे वह एक चमत्कार कहती थी।

युद्ध के बाद वह जर्मनी गयी। जिस विश्वास को परमेश्वर ने उसे दिया है और किस प्रकार यीशु हमारे शत्रुओं को भी माफ करने में सहायता करता है, यहा तक की उनसे प्यार कर सकें - इन सब बातों को वहाँ बड़ी बड़ी सभाओं में लोगों से वह कहती थी।

एक दिन सभा के बाद, वह द्वार पर खड़े लोगों से हाथ मिला रही थी। एक आदमी उसकी ओर चला आया और उसने कहा कि युद्ध के बाद वह एक मसीही बन गया। कोरी ने उस आदमी को पहचान लिया। रेवन्सब्रुक में उन अति क्रूर पहरेदारों में से वह एक था। उस आदमी ने कहा कि वह जानता है कि उन सारी बातों को जो उसने बीते दिनों में की है परमेश्वर ने उसे माफी दी है। मगर वे उससे भी माफी चाहता है।

जब वो हाथ आगे बढ़ा रहा था, कोरी को वह सब याद आया कि बेट्सी और कई हजारों लोगों को उसने कैसे यातना दी है। वो अपने मन में विचलित हो उठी। उसने सोचा कि वह उसको माफ नहीं कर पाएगी। मन में उसने प्रार्थना की 'प्रभु, मैं उससे हाथ तो मिला सकती हूँ, मगर मैं अपनी भावनाओं को नहीं बदल सकती। केवल तुम ही वह कर सकते हो।'

उसने उसका हाथ अपने हाथों में लिया। तभी अचानक उसके हाथों में और बाद में पूरे शरीर में एक अजीब सा स्नेह भाव भर गया, और उन सारी कड़वी यादों को पिघला दिया।

अपनी आखों में आंसू लिये, उस आदमी जिसने एक वक्त उसे बहुत यातना दी थी उससे कहा, 'मैं अपने पूरी हृदय से तुम्हें माफ करती हूँ।' प्रिय पाठक, किसी ने तुम्हारे साथ किसी तरह का बहुत बुरा व्यावहार

किया हो? क्या तुम ऐसे व्यक्ति को माफ कर पायें हो? क्या तुम में किसी दूसरे के साथ कोई बुरा बरताव किया हो? क्या उस व्यक्ति से अपने माफी मांगी है?

जैसा मैं हूँ

इस गीत के बारे में यह कहना सही ही होगा कि यीशु के चरणों में पापियों को लाने के लिए किसी पावन गाने या गीत का उपयोग, इस से बढ़कर नहीं हुआ होगा।

इस गीत ने बड़ी अधिक संख्या में लोगों के दिलों को छुआ है; चाहे वह विशाल सुसमाचार सभाओं में शानदार गीत मंडली द्वारा गाया गया हो जहाँ सौइयों की तादाद में लोग आते हैं। या बड़े और छोटे सभा-समूहों में जहाँ एक या दो आते हैं।

जैसा मैं हूँ ... , सकारात्मकता का स्पष्ट और सीधा स्वर सुनाई पड़ता है। यह गीत एक पापी को उद्धारक के पास बुलाता है। यह गीत पाप में अंधे हुए, नीच और बेचारे को उसके सारे भय के बावजूद मसीह के पास आने का निमंत्रण देता है। उसके सारे गुनाहों के साथ और उसकी सारी अयोग्यताओं में वह ऐसे ही (उद्धारक के पास) आये।

पवित्र बाइबल के अनुसार यह निमन्त्रण, सही है। मसीह के पास आने से पहले अपने जीवन को सुधारना है - ऐसे कुछ भी नहीं हैं जो हम कर सकें जिससे कभी भी हम परमेश्वर की निगाहों में और ज्यादा स्वीकार किया जाएँ। बाइबल यह साफ सिखाता है कि परमेश्वर पापी से हर हालत में प्रेम करता है। और परमेश्वर चाहते हैं कि वह वैसे ही उनके पास आये।

केवल यीशु मसीह ही हमें पाप के दोष और दण्ड से मुक्त कर सकते हैं। जिन्दगी की सारी

समस्याओं को सिर्फ वहीं सुलझा सकते हैं। शान्ति, आनंद और भविष्य की आशा देनेवाला एक मात्र वही है।

एक एंगलिक पादरी जो ब्राइटन इंग्लैण्ड के निवासी थे, उनकी पुत्री ने इस अनोखे गीत की रचना की। उसके हताश और निराशा के बेबस अनुभव से वह गीत उभरा है।

सन् 1833 में एक दिन जब शार्लेट एलिअंट चवालीसवे साल में थी, वह अजीब सी तनहाई और उदासी महसूस कर रही थी। परिवार के अन्य सदस्य कलीसिया के एक कार्यक्रम में गये हुए थे, जब की वह बिस्तर पर पड़ी हुई, अपाहिज, घर पर ही थी।

अपनी बिमारी से पहले, वह जिन्दगी की कई विलासाओं का आनंद उठाती हुई, एक खुश और चिंता-रहित जीवन बिता रही थी। एक चित्र-कलाकार होते हुई उसने कुछ हद तक लोकप्रियता भी हासिल की।

यह सारी गुजरी जिन्दगी, और अब, बीमारी की मारी हुई, जो उसके बचे जीवन पर अभिशाप था, वह बिल्कुल बेकार और कटी-सी महसूस कर रही थी। इस के अलावा, कई सालों से एक मसीही विश्वासी होते हुए भी, प्रभु के साथ अपने सम्बन्ध के विषय में उसे संदेह होने लगा। वह कैसे निश्चित कर सकती है कि उसकी आत्मा के विषय में सब कुशल से है।

अपने इस दुख में, बाइबल के पदों को ढूँढ उन आधारों की एक सूची बनाने लगी, जिसके कारण वह यह विश्वास कर सके कि वह निश्चित ही परमेश्वर की बेटी है। उद्धारक के अनमोल लहू की सामर्थ्य को वह पहचानने लगी। विश्वास के द्वारा, जो उसके पास आते हैं, उन सब को ग्रहण करने का परमेश्वर का वादा उसने याद किया। शुद्ध करके, क्षमा और

उद्धार देने की परमेश्वर की क्षमता को उसने याद किया।

जब वह इन महान सच्चाइयों पर मनन कर रही थी, उसे अपने मन में धीरज मिला। और शार्लेट एलिअंट जिसे कविता लिखने का शौक भी था, जल्दी ही अपनी मन में उठते इन सारे खयालों को पंक्ति में लिखने लगी।

जैसा मैं हूँ बिन योग्यता,
पर तेरा लहू बहा था,
और तेरी आज्ञा है कि
आ,
मसीह, मसीह, मैं आता
हूँ।

यह कविता तुरन्त प्रसिद्ध हो गई और बड़ी संख्या में पूरे इंग्लैण्ड में बिकने लगी। और तो और कई अन्य भाषाओं में भी इसकी अनुवाद होने लगा।

शार्लेट एलिअंट, अपनी बाकी जिन्दगी में कभी भी अच्छी सेहत का आनंद नहीं पाई। वह बिस्तर पर ही थी जब तक परमेश्वर ने उसे, आखिर में, स्वर्ग न बुला लिया। तब वह बयासी वर्ष की थी।

फिर भी, वह अपनी मृत्यु से पहले, उसे लोगों से हजार से ज्यादा, धन्यवाद और अभिनन्दन के पत्र मिले। लोग उसके प्रति आभारी थे कि उसने इस कविता की रचना की - 'जैसा मैं हूँ।'

मैं जैसा हूँ तू देवेगा
छुटकारा क्षमा शुद्धता
और मुझे ग्रहण करेगा
मसीह, हे परमेश्वर के
मेमने, मैं आता हूँ।

- चुनी हुई।